# गगनांचल

साहित्य कला एवं संस्कृति का संगम

वर्ष: 40, अंक: 1-2, जनवरी-अप्रैल, 2017 (संयुक्तांक)

## गिरमिटिया एवं अन्य प्रवासी साहित्य विशेषांक

# गगनांचल

जनवरी-अप्रैल 2017 (संयुक्तांक)

प्रकाशक
**रिवा गांगुली दास**
महानिदेशक
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली

संपादक
**डॉ. हरीश नवल**

सह-संपादक
**डॉ. आशीष कंधवे**

**ISSN : 0971-1430**

**संपादकीय पता**
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्
आजाद भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002
ई-मेल: ddgnk.iccr@nic.in, dirpub.iccr@gov.in

गगनांचल अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध है।
www.iccr.gov.in/journals/hindi-journals
पर क्लिक करें।

गगनांचल में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है। किंतु पुनर्मुद्रण के लिए आग्रह प्राप्त होने पर अनुमति दी जा सकती है। अतः प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना कोई भी लेखादि पुनर्मुद्रित न किया जाए। गगनांचल में व्यक्त विचार संबद्ध लेखकों के होते हैं और आवश्यक रूप से परिषद् की नीति को प्रकट नहीं करते। प्रकाशित चित्रों और फोटोग्राफ्स की मौलिकता आदि तथ्यों की जिम्मेदारी सम्बंधित प्रेषकों की है, परिषद् की नहीं।

**शुल्क दर**

| | | | |
|---|---|---|---|
| वार्षिक | : | ₹ | 500 |
| | | यू.एस. $ | 100 |
| त्रैवार्षिक | : | ₹ | 1200 |
| | | यू.एस. $ | 250 |

उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली' को देय बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

मुद्रक: सीता फाईन आर्ट्स प्रा. लि. नई दिल्ली-110028
www.sitafinearts.com

## अनुक्रम

■ गिरमिटिया तथा प्रवासी संदर्भ ■

1. गिरमिटिया व अन्य प्रवासी हिन्दी लेखन : प्रो. महिपती जगन्नाथ शिवदास 5
2. गिरमिटिया हिन्दी : संरक्षण और संवर्द्धन : डॉ. विमलेश कांति वर्मा 7
3. गिरमिटिया हिन्दी कविता में भारतीय संस्कृति : प्रो. हरिमोहन 10
4. गिरमिटिया दर्द की आवाज : प्रवासी पत्रिका : डॉ. राकेश कुमार दुबे 18
5. गिरमिटिया श्रमिकों के देश में दस दिन : डॉ. चंद्रकांता किनरा 22
6. गिरमिटियों के 'बैठका' से विश्वविद्यालय तक : डॉ. उमेश कुमार सिंह 27
7. गिरमिटिया देश फीजी : हिन्दी पत्रकारिता के 103 वर्ष : डॉ. जवाहर कर्नावट 31
8. भारतवंशी गिरमिटिया : राजेश कुमार मांझी 37
9. साहित्य के दर्पण में प्रवासी साहित्य : स्नेह ठाकुर 50
10. स्विटज़रलैंड को लुभाया हिन्दी ने : डॉ. ज्योति शर्मा 54
11. अरमेनिया में हिन्दी भाषा : अध्ययन-अध्यापन : डॉ. कविता सिंह 57

■ विमर्श ■

12. चीनी और चाय का समाजशास्त्र : रीतारानी पालीवाल 61
13. हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच सार्थक संवाद की आवश्यकता : रमेश चंद्र शाह 65
14. भारतीय संस्कृति का मूल आधार 'अध्यात्म' : आचार्य डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त 67
15. हिन्दी ग़ज़ल का परिदृश्य : ज्ञान प्रकाश विवेक 70
16. ज़िन्दग़ी की उड़ान : एक ख्वाब : डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू 74
17. आर्यों का मूल निवास स्थान : प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा 78
18. ध्वनि में रस, रस में जीवन तलाशते अभिनव गुप्त : डॉ. उदय प्रताप सिंह 84
19. महादेवी वर्मा का गद्य : चिन्तन और सम्वेदना : राजेन्द्र परदेसी 89
20. ज्ञानपीठ विजेता ओ.एन.वी. कुरुप का काव्य : डॉ. प्रमोद कोवप्रत 92
21. सर्वेश्वर की सृजन चेतना एवं सौंदर्य-बोध : दान बहादुर सिंह 95
22. ये वादियाँ ये फिज़ायें बुला रही हैं तुम्हें : जितेन्द्र निर्मोही 100
23. स्मृति शेष : उस्ताद हलीम जाफर खां : डॉ. राजेश कुमार व्यास 103

■ कहानियाँ ■

24. अर्धांगिनी : दिव्या माथुर (इंग्लैंड) 105
25. अभिमानी-निराभिमानी : पुष्पा सक्सेना (अमरीका) 114

# गिरमिटियों के 'बैठका' से विश्वविद्यालय तक

डॉ. उमेश कुमार सिंह

*"...हिंदी के विकास के संदर्भ में मॉरीशस में 'बैठका' कैसे अस्तित्व में आई और वह कैसे हिंदी के साथ जुड़ गई। 'बैठका' के अस्तित्व में आने के इतिहास पर एक दृष्टि डालना अति आवश्यक हो जाता है क्योंकि भारत में 'बैठक' वह स्थान है जहाँ पर समाज के लोग अपने समाज के अन्य लोगों के साथ बैठकर चर्चा-परिचर्चा अथवा दूसरे शब्दों में विचार विनिमय किया करते हैं। मॉरीशस के लेखक पूजानंद नेमा ने बैठका की परिभाषा इस प्रकार दी है, "बैठका भारतीय आप्रवासियों के सामाजिक जीवन में न केवल एक शैक्षिक संस्था है, बल्कि भारतवंशियों के सम्पूर्ण विकास का स्रोत भी है, जहाँ पर उत्सवों और पर्वों के जरिये धर्म, बहुधा, संस्कृति आदि का प्रचार प्रसार हुआ।"..."*

वर्क - हिंदी चेयर, महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस
e-mail : umesh_jnu@rediffmail.com
Mobile : 230-57022776 (Mauritius),
09423307797 (Bharat)

मॉरीशस दुनिया का एकमात्र देश है जो पूरी तरह से गिरमिटिया आप्रवासियों का देश कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि इस देश को गिरमिटियों ने खून पसीने से सींचकर पुष्पित और पल्लवित किया है। यह देश भारत की तरह मिलीजुली संस्कृति वाला देश है जहाँ पर सभी धर्मों के लोग आपस में मिल-जुलकर साथ-साथ रहते हैं और अपने-अपने धार्मिक रीति-रिवाजों का बड़ी सहिष्णुता के साथ पालन करते हैं। इस देश के वासियों को अपनी संस्कृति पर गर्व है। इस देश में भारतीय आप्रवासी सबसे बड़ी तादाद में रहते हैं, यहाँ पर सामान्य परिस्थितियों में 19वीं शताब्दी में दुनिया का सबसे बड़ा विस्थापन (माइग्रेशन) हुआ था जिसमें 4.5 लाख लोग रोजगार के लिए गए थे। वर्तमान में मॉरीशस की जनसंख्या 12 लाख 55 हजार है। पूरे देश को नौ जिलों में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार है: 1. फलक, 2. पैंड पोर्ट, 3. मोका, 4. पाम्प्लेमुस (उत्तर में), 5. रिव्येर ज्युसर राम्पार, 6. रिव्येर नॉयर (ब्लेक रिवर), 7. सावन (दक्षिण में), 8. पोर्ट लुईस, 9. पलेनस विल्हम आदि।

मॉरीशस हिंद महासागर में बसा एक प्रमुख द्वीप है। इस देश को प्रकृति का ऐसा वरदान प्राप्त है कि यहाँ लगभग हर समय आसमान में बादल देखे जा सकते हैं और वे बादल आपके ऊपर महीन-महीन बूँदों की बौछार करते हुए से प्रतीत होते हैं। उन महीन-महीन बूँदों में भीगने के अनुभव से ऐसा प्रतीत होता है जैसे सैलानियों के ऊपर इत्र का छिड़काव किया जा रहा है। इस प्राकृतिक सौंदर्य की छटा से भरपूर देश में ऐसा अद्भुत स्वागत किया जाता है। इस देश के नीले सागर के किनारों पर दुनिया के खूबसूरत बीच हैं जिनकी कुल संख्या लगभग 200 के करीब है। मॉरीशस हिंद महासागर का बहुत छोटा द्वीप होने के बावजूद यहाँ पर गाँवों की हरियाली आपका मन मोह लेती है। इस देश में भारतीयों की संख्या दूसरे देशों के आप्रवासियों से कहीं अधिक है। विदेशी लेखक बरन ग्रंट ने अपने लेखन में जिक्र किया है कि 1769 में हिंदुस्तान से बहुत से मद्रासी पांडिचेरी से तथा सन 1758 में बंगाल से बंगाली लोग आकर मॉरीशस में बसे थे परन्तु इस देश में हिंदी की शुरुआत 1834 से ही मानी जा सकती है क्योंकि इस वर्ष पहले भारतीय आप्रवासी ने आप्रवासी घाट पर अपना कदम रखा था। हिंदुस्तान से शर्तबंदी कुली मजदूर के रूप में पहले तीन वर्ष के गिरमिट करार पर परन्तु बाद में पांच वर्ष के करार पर लाए गए थे।

इस देश में ग्यारह भाषाएँ बोली जाती हैं जिनमें भोजपुरी, खड़ी बोली, तमिल, उर्दू, तेलुगु, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी, फ्रेंच, चीनी तथा मिश्रित

भाषा क्रियोल आदि प्रमुख हैं। भारत के अतिरिक्त सभी देशों में बोली जाने वाली हिंदी की दृष्टि से मॉरीशस सबसे आगे है। यही वह देश है जहाँ सबसे पहले हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति जागरूकता आई थी। इस देश से सन 1909 में हिंदुस्तानी नामक पत्र प्रकाशित हुआ था जिसके संपादक मणिलाल डॉक्टर थे।

इसके बाद हमें उस दौर की परिस्थितियों से भी परिचित होने की आवश्यकता जान पड़ती है। उन परिस्थितियों को जानने के लिए हमको सन 1934 के इतिहास को खंगालना पड़ेगा। उस दौर में शर्तबंदी कानून के तहत गिरमिट करार पर कुली मजदूर गन्ने की खेती में काम करने के लिए भारत से मॉरीशस बुलवाए गए थे।

मॉरीशस देश में भले ही जापान की तरह प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है, क्योंकि इस देश का निर्माण ज्वालामुखी की राख से हुआ है। यहाँ पर 19वीं सदी के प्रारंभ में बड़े पैमाने पर गन्ने की खेती की जाती थी। उस दौर में गन्ने से चीनी बनाने के लिए छोटे-बड़े सब कारखानों को मिलाकर लगभग 303 से अधिक चीनी मिलें तथा इससे कुछ अधिक संख्या में चीनी की कोठियां हुआ करती थीं। यह बात उस दौर की है, जब गन्ने की ढुलाई बैलगाड़ियों द्वारा की जाती थी। तब गन्ने की रुपाई से लेकर खुदाई और कटाई का सब काम मजदूर हाथ के द्वारा किया करते थे। आज भी मॉरीशस में लगभग 70 चीनी बनाने के बड़े कारखाने हैं परन्तु आज भी इतने चीनी बनाने के कारखानों के निशान प्रत्येक एक दो दो गाँवों के मध्य में एक चीनी कारखाने की चिमनी के निशान देखे जा सकते हैं। आज उदाहरण के तौर पर हवाई अड्डे के नजदीक समाज सेवक एवं शिक्षक डॉ. गंगू जी का गाँव है। उस क्षेत्र में कभी 7 चीनी कारखाने हुआ करते थे लेकिन आज उस पूरे इलाके में मात्र एक चीनी बनाने का कारखाना ही शेष रह गया है।

हिंदी के विकास के संदर्भ में मॉरीशस में 'बैठका' कैसे अस्तित्व में आई और वह कैसे हिंदी के साथ जुड़ गई। 'बैठका' के अस्तित्व में आने के इतिहास पर एक दृष्टि डालना अति आवश्यक हो जाता है क्योकि भारत में 'बैठक' वह स्थान है जहाँ पर समाज के लोग अपने समाज के अन्य लोगों के साथ बैठकर चर्चा-परिचर्चा अथवा दूसरे शब्दों में विचार विनिमय किया करते हैं। मॉरीशस के लेखक पूजानंद नेमा ने बैठका की परिभाषा इस प्रकार दी है, "बैठका भारतीय आप्रवासियों के सामाजिक जीवन में न केवल एक शैक्षिक संस्था है, बल्कि भारतवंशियों के सम्पूर्ण विकास का स्रोत भी है, जहाँ पर उत्सवों और पर्वों के जरिये धर्म, संस्कृति आदि का प्रचार-प्रसार हुआ।" इस प्रकार मॉरीशस में भारतवंशियों के जीवन के विकास के प्रत्येक सोपान तक की यात्रा में बैठक का अभूतपूर्व योगदान रहा है।

अब हम इस देश की हिंदी बैठकाओं के बारे में चर्चा करेंगे। इन चीनी मिलों में काम करने वाले गिरमिट कुली मजदूर शाम को काम के बाद खाने के उपरांत बैठक में मिलते थे, वहीं पर अपने दुःख-दर्द और कथा भागवत, सलाह-मशविरा और हिंदी की चर्चा आदि किया करते थे। यही वह बिंदु है जहाँ से हिंदी सीखने सिखाने का सूत्रपात हुआ था। इसी स्थान से 'हिंदी गई तो धर्म गया' का नारा पैदा हुआ था। इस कार्य से चीनी कोठियों के मालिक नाराज रहा करते थे। उन्होंने कुछ समय उपरांत इस बैठका पर भी प्रतिबंध लगा दिया था परन्तु इस सबके बाद भी कुलियों ने आपस में मिलना-जुलना नहीं छोड़ा था। पहले वे खुलकर एक-दूसरे से मिलते थे परन्तु प्रतिबंध लगाने के बाद अब वे छिपकर मिला करते थे। इस बैठका की बदौलत आज मॉरीशस में हिंदी, भोजपुरी जीवित ही नहीं है बल्कि उनमें जागरूकता भी आई है। इस बात का जिक्र अभिमन्यु अनत ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'लाल पसीना' में किया है।

आज मॉरीशस में हिंदी की जो स्थिति और प्रचलन है, उसके पीछे सही मायने उसे पीछे 'बैठका' से हिंदी की शुरुआत इतिहास से देना आवश्यक है। इस देश में आज हिंदी के शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए चार संस्थाएँ कार्य कर रही हैं जिनमें हिंदी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा, आर्य रवि वेद सभा एवं महात्मा गाँधी संस्थान। हम इन संस्थाओं में से किसी के कार्य को कम अथवा अधिक नहीं माप सकते हैं क्योंकि हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण के इस महायज्ञ में इन संस्थाओं ने भरपूर योगदान दिया है। इसके लिए पूरा समाज उनकी ऋणी रहेगा। इन स्वयं सेवी संस्थाओं और सभाओं का संक्षित विवरण जानकारी के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिंदी प्रचारिणी सभा का मुख्यालय, लोंग माउंटेन, मॉरीशस में स्थित है। वर्तमान में इस संस्था के प्रधान श्री यंत्रदेव बुद्दू हैं जो हिंदी को नई ऊँचाइयों पर ले जाना चाहते हैं। इस संस्था के संस्थापक श्री रामलाल मंगर थे, जिन्होंने इस सभा की स्थापना 26 जून 1926 को की थी। उसके तत्काल बाद से यह संस्था हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य कर रही है पूरे देश में इसकी कुल 187 शाखाएँ हैं जिनमें हिंदी के पठन-पाठन का कार्य किया जा रहा है। आर्य सभा मॉरीशस का मुख्यालय पाई, मॉरीशस में स्थित है इसकी स्थापना वर्ष 1910 में हुई थी। प्रारंभ में इसका उद्देश्य आर्य सभा के उद्देश्यों का प्रचार-प्रसार करना था और इस प्रचार के लिए उन्होंने हिंदी भाषा को अपनाया था। इसके लिए सन 1934 में तिलक विद्यालय को एक राष्ट्रीय संस्था का रूप दिया गया। बाद में इसका नाम परिवर्तित करके हिंदी प्रचारिणी सभा कर दिया गया था। तब से लेकर आज तक हिंदी प्रचारिणी सभा शैक्षिक संस्था के रूप में हिंदी का निरंतर प्रचार-प्रसार कर रही है। 'दुर्गा हस्तलिखित पत्रिका' का प्रथम प्रकाशन इसी संस्था द्वारा किया गया था। वर्तमान में इसके प्रधान डॉ. उदय नारायण गंगू जी हैं। इसकी पूरे देश में 400 शाखाएँ हैं जिनमें से 175 शाखाओं में हिंदी के पठन-पाठन का कार्य चल रहा है।

उ दुकान से एगो पुस्तक खरीदलसा।" (उसने दुकान से एक पुस्तक खरीदी)।

इसी तरह कुछ वाक्य मॉरीशस की भोजपुरी में इस तरह कहे जा सकते हैं—

"तोर भाय कोनची करेला।" (तुम्हारा भाई क्या करता है)। कोनची = क्या, करेला = करता है।

"तोहर भाय कोनची करेलन।" (तुम्हारा भाई क्या करता है) सम्मानसूचक है।

"हम भाय दोक्तेर ह/हवन।" (हमारा भाई डॉक्टर है।) दोक्तेर = डॉक्टर, हवन = है।

आज हम सूचना क्रांति और बहु-भाषाओं के दौर में रह रहे हैं इसलिए अधिक से अधिक भाषा सीखने-सिखाने पर बल देने की आवश्यकता है। आज हिंदी सीखने के साथ-साथ दूसरी विदेशी भाषाओं को भी जानने की अति आवश्यकता है। इस दौर में भाषा ही ज्ञान प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। भाषा हमें समाज, संस्कृति, रीति-रिवाजों से जोड़ती ही नहीं है बल्कि आज के दौर में भाषायी ज्ञान के द्वारा रोजगार की बहुतायत सी हो गई है।

आज दुनिया भर के उद्योगपति भारत के साथ व्यापार के लिए हाथ मिलाना चाहते हैं। इतना ही नहीं, प्रत्येक देश के उद्योगपति को अपने व्यापार को बढ़ाने और प्रचार-प्रसार के लिए उन्हें बड़े पैमाने पर दुभाषियों, अनुवादकों और प्रूफ रीडरों आदि की आवश्यकता तो है ही परन्तु इसके अतिरिक्त भारत की क्षेत्रीय भाषाओं और हिंदी फिल्म उद्योग में सभी फिल्मों को मिलाकर लगभग 1200 फिल्में प्रति वर्ष बनाई जाती हैं। आज के युग में बड़े बजट की फिल्मों को दुनिया भर में अनुवाद की मदद से प्रत्येक भाषा में एक साथ रिलीज किया जाता है। दुनियाभर के टी.वी. चैनलों में, समाचार पत्रों की सूचनाएं भी अनुवाद के द्वारा ही एक क्षण मात्र में एक कोने से दूसरे कोने तक पलक झपकते ही पहुँच जाती हैं। पर्यटन उद्योग, दवा, कपड़ा आदि प्रत्येक व्यापार के लिए विज्ञापन की आवश्यकता होती है, प्रत्येक सामान (प्रोडक्ट) के हैण्ड आउट पम्पलेट आदि को बनाने के लिए विज्ञापन की आवश्यकता होती है।

इस विश्लेषण के बाद हिंदी के क्षेत्र में नौकरी नहीं मिलती हैं यह नहीं कहा जा सकता है। किसी भी भाषा को रोजगार की कमी है, अथवा नौकरी नहीं मिलती है, इस आधार पर खारिज नहीं किया जा सकता है परन्तु उसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता होती है। यहाँ पर इस बात से कतई सहमत नहीं हुआ जा सकता है कि मॉरीशस के जो विद्यार्थी हिंदी, फ्रेंच और इंग्लिश को लेकर अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं उनके पास नौकरी नहीं है अथवा नौकरी की कमी है। बल्कि नौकरी नहीं है जैसे शब्दों को स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता है। इस बात के लिए मॉरीशस वासियों को बधाई देता हूँ कि वे तीन-तीन विदेशी भाषाओं का ज्ञान रखते हैं। इसी के चलते वे दुनिया में अपने को श्रेष्ठ साबित कर सकते हैं। विचारों से लोग ऊँचे उठते और नीचे गिरते हैं। अंत में नि:संकोच कहा जा सकता है कि मॉरीशस में हिंदी के प्रचार-प्रसार का जो सिलसिला हिंदी बैठका से प्रारंभ हुआ था, आज उसने वट वृक्ष का आकार ग्रहण कर लिया है, अर्थात् मॉरीशस में हिंदी प्राइमरी से विश्वविद्यालय स्तर तक पढ़ाई जाती है इसलिए इस देश में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है परन्तु इसके लिए निरंतर प्रयास करते रहने की अति आवश्यकता है।

**संदर्भ—**


1. A pictorial recollection (2001), Labor immigrants in Maritius, MGI, ISBN 99903393925
2. मॉरीशस में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण, अलका धनपत।
3. बैठक का अर्थ एवं परिभाषा, वसंत 138, अभी उद्योय, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, मॉरीशस।
4. मॉरीशस का इतिहास, पंडित आत्माराम विश्वनाथ, सं. प्रह्लाद रामशरण।
5. हिंदी प्रचारिणी सभा का एक संक्षिप्त परिचय।
6. आर्य सभा का संक्षिप्त परिचय।
7. आर्य रविवेद सभा का संक्षिप्त परिचय, पोर्ट लुईस, सादे मॉस।

PDF Created Using

Camera Scanner

Easily Scan documents & Generate PDF

GET IT ON Google Play

https://play.google.com/store/apps/details?id=photo.pdf.maker